Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाल मनोविज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक बोध : समकालीन हिंदी बाल कथा साहित्य के संदर्भ में

गीतांजली कोलीवाल* डॉ. ज्योति यादव**

* शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.) भारत

शोध सारांश – बाल साहित्य का प्रथम रूप लोरी व प्रभाती है। बाल साहित्य के नाम पर एक अरसे तक बालकों के लिए साहित्य लिखा गया है। बाल साहित्य से तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जो बालोपयोगी साहित्य से भिन्न रचनात्मक साहित्य होता है। विज्ञान कथा अथवा साइंस फिक्शन साहित्य की वह विधा है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में संभावित परिवर्तनों को अभिव्यक्त कर बच्चों को विज्ञान के संबंध में नई-नई जानकारियाँ देकर उनकी उत्सुकता को शांत करती है। विज्ञान लेखन के लिए गूढ़ विषय को सरल, सुगम, रोचक, मनोरंजन व मनोवैज्ञानिक शैली में बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

बाल साहित्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण सर्वाधिक मायने रखता है। वैज्ञानिक तथ्यों को आधार बनाकर उसमें कल्पना को जोड़ते हुए बाल मनोविज्ञान की आधारशिला पर संभावित सत्य के रूप में प्रस्तुत कर विज्ञान फंतासी भी लिखी गई। अमृतलाल नागर, हरिकृष्ण देवसरे, जाकिर अली रजनीश, शकुंतला कालरा, उषा यादव, विभा देवसरे, प्रकाश मनु, परशुराम शुक्ल, गोविंद शर्मा, क्षमा शर्मा, शिखर चंद्र जैन, मनोहर चमोली मनु आदि ऐसे कई नाम है जिनकी बाल विज्ञान साहित्य से संबंधित रचनाएँ प्रकाशित हुई है। विज्ञान कथाएं बालकों में वैज्ञानिक रुचि पैदा कर विज्ञान के अविष्कार एवं आविष्कारकों के संघर्ष को बालकों के सामने प्रस्तुत करती है। विज्ञान फंतासी साहित्य में विज्ञान के धरातल पर बाल मन को टटोलकर कथा का ताना-बाना बुना गया है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है जिस कारण बाल साहित्य में वैज्ञानिक चेतना का समाहार युगीन आवश्यकता बन गया है। आज ऐसा बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है जो बच्चों को संस्कारित करने की जगह उनकी मनोवृतियों को विकृत कर रहा है। समाज में हो रहे विकास और वैज्ञानिक प्रगति के साथ बच्चों का सतत समन्वय बनाए रखने के लिए उन्हें मानसिक पोषण देने के लिए नित्य नवीन स्तरीय बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल साहित्य के सृजन की आवश्यकता है।

शब्द कुंजी – बालोपयोगी, प्रौद्योगिकी, आविष्कारक, तथ्य, दृष्टिकोण, फंतासी।

प्रस्तावना – छोटे बच्चों का संसार अपने आकार-प्रकार, रंग-रूप में बड़ों के संसार से सर्वथा भिन्न होता है। बड़ों के संसार में लोग शिष्टाचार, सभ्यता, संस्कृति, समाज, जाति, राष्ट्र, नियम, आदर्श आदि विद्यमान रहते हैं जबकि बच्चों के संसार में इन सब का अभाव रहता हैं। बच्चे निजी तौर पर ना तो शिष्टता व सभ्यता का अर्थ समझते हैं और न ही नियमों व आदर्शों की कोई चिंता उन्हें सताती है। समय के साथ-साथ बच्चों को सूचना, शिक्षा और ज्ञान प्रदान करने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता अनुभव की गई जो बड़े होते बच्चों की जिज्ञासा को शांत कर सकें और उनके उत्सुक मन को तृप्ति प्रदान कर सकें। ऐसे में कहानी का आविष्कार हुआ। कहानी द्वारा प्रकृति पौधों, पशु,पक्षी, चाँद-तारों, किरण, बादल, वर्षा, नैतिकता, मानवीय मूल्य आदि विभिन्न पक्षों का ज्ञान बालकों को दिया गया। पंचतंत्र की प्रणेता आचार्य विष्णु शर्मा ने अपनी कहानियों द्वारा ही भटके हुए राजकुमारों को सुमार्ग पर ला दिया। उनकी कहानी आज विश्व की लगभग सभी भाषाओं में अनूदित होकर पुस्तक रूप में उपलब्ध हैं।

राष्ट्र के निर्माण व उत्थान के लिए बच्चों के चतुर्दिक विकास को आवश्यक माना गया है। जिसमें बाल साहित्यकारों की भूमिका अहम रही है। बाल साहित्य बाल और साहित्य के योग से बना है। बाल जिसके अंतर्गत बच्चें आते हैं और साहित्य का अर्थ होता है हित करना। 'जिस भाषा में बाल साहित्य का सृजन नहीं होता उसकी स्थिति उस स्त्री के समान है जिसके संतान नहीं होती। प्रत्येक देश का भविष्य उसके बच्चों पर निर्भर होता है वही उसके भावी निर्माता होते हैं। अत: अब जो देश अपने इन भावी निर्माताओं के प्रति उदासीन रहता है उसका भविष्य अंधकार पूर्ण समझना चाहिए।'[1]

जो साहित्य बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो उनके विकास और उन में संस्कारों के निर्माण हेतु लिखा जाए वह बाल साहित्य कहलाता है। जिससे उनमें चारित्रिक, शैक्षिक, मानसिक व नैतिक गुण विकसित होते हैं। बाल साहित्य के संबंध में विभिन्न विद्धानों के अलग-अलग मत है-

बाल साहित्य की प्रथम परिभाषा आचार्य विष्णु शर्मा की है- विष्णु शर्मा के पंचतंत्र को बाल साहित्य के क्षेत्र में विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक माना जाता है जिसमें उन्होंने लिखा है-

'यत्नवे भाजने लग्न: संस्कारों नान्यथा भवेत् ।
कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते।।'

जिस प्रकार किसी नवीन पात्र के कोई संस्कार नहीं रहते, उसी प्रकार बच्चों की स्थिति होती है इसलिए उन्हें तो कथा आदि के द्वारा ही नीति के संस्कार बताने चाहिए।[2]

बाल गीतकार निरंकार देव सेवक के शब्दों में- 'जिस साहित्य से बच्चों का मनोरंजन हो सकें, जिसमें वे रस ले सके और जिसके द्वारा वह अपनी

भावनाओं और कल्पनाओं का विकास कर सके। वह बाल साहित्य है।'[3]

सोहनलाल द्विवेदी का विचार है कि 'सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हो जो बच्चों के मन को भायें यूं तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते हैं किंतु सचमुच जो बालक के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे वही सफल बाल साहित्य लेखन है।'[4]

बाल साहित्य के नाम पर एक अरसे तक 'बालकों के लिए साहित्य' लिखा गया है। बाल साहित्य से तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जो बालोपयोगी साहित्य से भिन्न रचनात्मक साहित्य होता है अर्थात जो विषय निर्धारित करके शिक्षार्थ लिखा हुआ ना होकर बालकों के बीच का अनुभव आधारित रचा गया होता है। वह कविता, कहानी,नाटक आदि होता है न की कविता, कहानी नाटक आदि के चौखट से भरी हुई विषय प्रधान जानकारी अथवा उपदेश पूर्ण सामग्री होता है।[5]

बाल साहित्य के संबंध में दिविक रमेश कहते हैं कि 'मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जैसे बच्चे की हम कल्पना करते हैं या बच्चे से जिन अपेक्षाओं की पूर्ति चाहते हैं उसके लिए बहुत कुछ हम बाल साहित्य पर निर्भर करते हैं। अत: बाल साहित्यकारों पर बहुत उत्तारदायित्व है यदि हम चाहते हैं कि बाल साहित्य बेहतर बच्चा बनाने में मदद करें और साथ ही वह बच्चों के द्वारा अपनाया भी जाए तो उसके लिए हमें अर्थात बाल साहित्यकारों को बाल मन से भी परिचित होना पड़ेगा।'

अमेरिकी कवि और बाल साहित्यकार चार्ल्स घिन्न के अनुसार 'जब आप बच्चों के लिए लिखो तो बच्चों के लिए मत लिखो अपने भीतर के बच्चें के द्वारा लिखो।'[6]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बाल साहित्य वह है जो बालकों के लिए लिखा जाये, जिसमें बालकों के स्तर के अनुकूल सहजता, सरलता, कौतूहलता और रोचकता हो, जो बालकों को प्रेरणा दे सके और उन्हें एक आदर्श नागरिक बनाने में सहयोग दें।

बाल साहित्य: बालक एवं विज्ञान : 'विज्ञान' शब्द को अंग्रेजी में Science कहते हैं। जिसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द SCIENTA से हुई है।SCIENTA का अर्थ है, ज्ञान KNOWLEDGE या जानना।'[7]

किसी भी वस्तु की जानकारी एकत्र करते हुए उसका अध्ययन और विश्लेषण करना ही विज्ञान है। विज्ञान का अर्थ– विशेष ज्ञान है। 'क्रमबद्ध ज्ञान का सिलसिलेवार वर्णन ही विज्ञान है। विज्ञान–चिंतन की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति ही बाल विज्ञान साहित्य है।'[8]

बाल विज्ञान : बाल साहित्य की एक लंबी परंपरा होने पर भी आज का बाल साहित्य कई अर्थों में पुराने बाल साहित्य से एकदम भिन्न है। परिवर्तन की लहर से बाल साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। वैज्ञानिक विकास ने बाल साहित्य में कई परिवर्तन किए हैं। बाल साहित्य ही नहीं आज का बच्चा भी पहले के बालक जैसा नहीं रहा है,आज का बच्चा सब कुछ आंखें मूंद कर मानने को उदित नहीं है। आज बच्चें ऑनलाइन माध्यम से भी बाल साहित्य देख और पढ़ सकते हैं। विज्ञान की नित् नूतन प्रगति ने उसकी चेतना को इतना प्रखर बना दिया है कि अंतरिक्ष पर पहुंचने का मनोरथ अब उसका सपना नहीं यथार्थ बन चुका है। वह विविध मुद्दों पर अपना स्वतंत्र मत रखना है और उस मत को लेकर बड़ों के साथ बहस करने में भी पीछे नहीं रहता। संचार माध्यमों की प्रगति ने आज उसमें जैविक चेतना उत्पन्न कर दी है, उससे उसमें गहन आत्मविश्वास आ गया है।[9]

विज्ञान समाज का अभिन्न अंग है। विज्ञान वहीं है जहां ज्ञान के साथ तार्किकता हो। बच्चें विज्ञान की नई–नई जानकारियाँ पाने को उत्सुक रहते हैं। विज्ञान को बच्चों तक पहुँचाने तथा उनमें जागरूकता लाने में बाल रचनाकार सशक्त भूमिका अदा करता है। बालक जब अपने परिवेश को समझने लगता है तो उसके मन में अनेकों सवाल उठने लगते हैं। उसके मन में उठते सवाल ही बाल विज्ञान कथाओं की पृष्ठभूमि को पुष्ट करते हैं।

विज्ञान कथा: विज्ञान कथा अथवा 'साइंस फिक्शन' साहित्य की वह विधा है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में संभावित परिवर्तनों की प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्ति देती है। विज्ञान को आधार बनाकर छोटी कहानी से लेकर उपन्यास तक लिखे जा सकते हैं। बच्चों के लिए विज्ञान लेखन एक कठिन कार्य है। इसके लिए जरूरी है कि विज्ञान जैसे गूढ़ विषय को सरल, बोधगम्य, रोचक और मनोरंजक शैली में बच्चों के सामने लाया जाएं। वैज्ञानिक दृष्टि को विकसित करने वाला बाल कथा साहित्य भी इसी कोटि में आता है। यह साहित्य बच्चों के भीतर रूढ़ियों और अंधविश्वासों के प्रति भय मिटाते हुए उनमें वैज्ञानिक दृष्टि से चिंतन करने की शक्ति उत्पन्न करता है। 'डॉ. देवसरे की ज्यादा रुचि अंधविश्वासों के खंडन और वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न उपन्यास लेखन की ओर रही है।'[10]

देवसर जी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अंधविश्वास की चादर को हटाकर नवीनता का प्रस्तुतीकरण करता है।

बाल साहित्य में वैज्ञानिक या तकनीकी उपकरण उतने मायने नहीं रखते जितना वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को परिभाषित करते हुए महात्मा बुद्ध ने कहा है कि 'किसी बात पर इसलिए विश्वास मत करो कि उन्हें वैसा बताया गया है अथवा गुरुजनों ने वैसा कहा है या परंपरा से वैसा होता आया है, किंतु उचित निरीक्षण, परीक्षण और विश्लेषण के बाद जो तुम्हें उचित लगे, कल्याणकारी लगे, सर्वहित कारी लगे उस सिद्धांत पर अमल करों और आजीवन उस पर डटे रहों।'[11] यही दृष्टिकोण आधुनिक युग की माँग है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है।

विज्ञान साहित्य का उद्देश्य बालकों की जिज्ञासा को शांत कर उन्हें वैज्ञानिक परिवेश की प्रति जागरुक करते हुए उनके मानस पटल पर विज्ञान के ज्ञान का विस्तार करना है ताकि वह अपने आप आसपास घटित हो रही घटनाओं का अवलोकन वैज्ञानिक ढंग से कर सकें। आधुनिक साहित्य में विविध पक्ष समाहित हैं। इसलिए बाल विज्ञान साहित्य का उतना ही महत्व है जितना अन्य साहित्य का है।

आज की वैज्ञानिक प्रगति और बच्चे : वर्तमान युग विज्ञान का युग है और उसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। इसी विज्ञान की प्रगति को जब रचनाकार सरल, रोचक व मनोरंजन रूप देकर बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करता है तो वह वैज्ञानिक बाल साहित्य कहलाता है। वैज्ञानिक बाल साहित्य विज्ञान की प्रगति का ही परिणाम है। क्षमा शर्मा के अनुसार आज का युग विज्ञान का है हम बालकों को तकनीक से अलग नहीं रख सकते तकनीक बच्चों के लिए किसी ईश्वर की तरह है।[12]

बच्चों को आज की वैज्ञानिक प्रगति से जोड़ना जरूरी है। बाल साहित्य इस काम को रोचक ढंग से कर सकता है लेकिन, लिखना और वह भी बच्चों के लिए और वैज्ञानिक विषयों पर कोई हंसी खेल नहीं है। बच्चों को विज्ञान की जानकारी देने वाली पुस्तकें रोचक, सरल और ग्राह्य शक्ति के अनुरूप होनी चाहिए। 'आज विशेषतौर पर बच्चों में वैज्ञानिक प्रगति विकसित करने,

उनमें वैज्ञानिक अभिरुचि जगाने और वैज्ञानिक सोच लाने के लिए हर संभव तरीके का इस्तेमाल किया जा रहा है, तभी हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का सपना की हमारे देश के बच्चे वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले नागरिक बनें साकार होगा।

वैज्ञानिक सोच आज प्रगति की सीढ़ियां पार करते हुए तकनीकी वह अंतरिक्षीय खोजों तक पहुंच गई है। सुश्रुत, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, भाभा इत्यादि विद्वानों ने अपनी बुद्धिमत्ता से पृथ्वी की विभिन्न विशेषताओं को परख कर नवीन रूप में उजागर कर अपना अमूल्य योगदान किया। हिंदी बाल कहानियों में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने वाली विज्ञानपरक कथाएँ सामने आई है। विज्ञान की कहानी लिखने का काम मुख्यत: स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही शुरू हुआ। मयंक जी की भिडंत कहानी 1965 में छपी। उसके बाद कहानियों का दौर सा चल पड़ा। कतिपय कहानीकारों ने ही इस कोटी की कहानियाँ लिखी हैं। अंतरिक्ष सूट में बंदर (अमृतलाल नागर), भूकंप (अलका सिन्हा), आकाश की सैर (डॉ. गोरख प्रसाद), जलयान की कहानी (राजेश दीक्षित), चमत्कार का रहस्य (शकुंतला कालरा), हमारा पर्यावरण हमारा जीवन (चंद्रकांत शर्मा), जीवन का ज्ञान विज्ञान तथा जनसंख्या और विकास (रितु प्रिया शर्मा), पर्सनल कंप्यूटर (वंदना अग्रवाल) आदि कृतियों में विज्ञान को रोचक व मनोरंजन रूप प्रदान कर बच्चों को उसके लाभ-हानि से अवगत कराया गया है। उषा यादव की कहानियों में बाल मनोविज्ञान का पुट अधिक प्रभावी है परंतु इसी के साथ उन्होंने छिटपुट वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त कहानियाँ लिखी है जो एक कठिन कार्य है। जब वैज्ञानिक दृष्टि का लेखन करना हो तब उसे सरल, बौद्धगम्य और रुचिकर बनाकर प्रस्तुत करना पड़ता है और ऐसा प्रयास उषा यादव ने किया है। जिस कारण इनकी कहानियाँ बच्चों को पसंद आती है। उषा यादव की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता, ऐतिहासिकता, सहासिकता, उपदेशात्मकता के साथ-साथ मनोरंजन व बाल मनोविज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक शैली का प्रयोग भी हैं।

परी कथाएं (संग्रह) में कई कथाओं में जादूई तकनीक का ऐसा प्रयोग है जो वैज्ञानिकता की और इंगित करता है। 'नयना-सुनयना' कहानी परियों की जादुई दुनिया में वैज्ञानिक शक्तियों को इंगित करती है। कहानी अंगूठी गायब में उषा यादव ने वैज्ञानिकता से भरी मानसिकता को दर्शाया है। 'चॉकलेट का पेड़' उषा यादव की विज्ञानपरक कहानी है। इसमें अंकित को कंप्यूटर गेम खेलते हुए दिखाया गया है ।अंकित चॉकलेट की बात सोचता है और स्वप्न की दुनिया में चला जाता है। यह अंतरिक्ष स्टेशन संसार के 16 देशों के द्वारा मिलकर शुरू किया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय अभियान है। इसका उद्देश्य धरती और अंतरिक्ष के बीच संबंध जोड़ना तथा अंतरिक्ष के ज्यादा से ज्यादा लाभों को धरती तक पहुँचना है।

1998 में इस स्टेशन के जायी और यूनिटी नामक दो खंड अंतरिक्ष में पहुंचाये और जोड़े जा चुके हैं। 31750 किलोग्राम वजन वाले 'यूनिटी' को 'जायी' के ऊपर रखना तथा पेचो से कसकर जोड़ना किसी दैत्य-दानव जैसी शक्ति वाले के भी बस की बात नहीं थी। कंप्यूटर से संचालित होने वाली रोबोट भुजाओं ने इस असंभव काम को भी संभव कर दिखाया। अगले पांच सालों में इस अंतरिक्ष स्टेशन में करीब 100 खंड और जोड़े जाएंगे।

अपनी वैज्ञानिक जानकारी पर अंकित इतरा उठा, वाह! कितना कुछ जानता है वह। उषा यादव ने वैज्ञानिक प्रगति और बाल जगत में विज्ञान के प्रति जागरुकता को अंकित के माध्यम से उजागर किया है।

विज्ञान के क्षेत्र भी खोजकर्ता को आविष्कारक कहा जाता है संसार में ऐसे बुद्धिजीवियों की खोज नई क्रांति पैदा करती है। प्रकाश मनु द्वारा रचित 'सुनो कहानी ज्ञान विज्ञान की' तथा 'अनोखी कहानी ज्ञान विज्ञान की' कहानी संग्रह में विज्ञान से जुड़े आविष्कार एवं आविष्कारकों का विवरण मौजूद है। प्रकाश मनु ने अपनी विज्ञान से जुड़ी हुई कहानियों मेंआइसक्रीम, चॉकलेट, पेंसिल और किताब के अतिरिक्त रबर, कपड़ा, सिलाई मशीन, बिजली, रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन, रेलगाड़ी, जहाज, कार और कंप्यूटर के आविष्कार की कहानियाँ लिखी जो बच्चों में विज्ञानपरक सोच परिपक्व कर उनके दृष्टिकोण को वैज्ञानिक रूप देती है।

कंप्यूटर से संबंधित कथाओं में विज्ञान के आधार पर कल्पना के ऐसी पंख फैलाए गए हैं कि पाठक पढ़े बगैर नहीं रह सकता। प्रकाश मनु की 'दुनिया का सबसे अनोखा चोर' कहानी सुपर कंप्यूटर बनाने वाले सुबोध और इस अनोखे चोरों को पकड़ने वाले देबू के इर्द-गिर घूमती है। ' गोपी की फिरोजी टोपी कहानी गोपी द्वारा बनाए लघु कंप्यूटर का वर्णन करती है।

'पप्पू की रिमझिम छतरी' कहानी में रचनाकार का वैज्ञानिक दृष्टिकोण झलकता है। पप्पू की रिमझिम छतरी में लेखन लिखते हैं यह ऐसी छतरी है जो किसी को दिखाई नहीं देती कितनी ही तेज बारिश हो मजाल है कि एक बूंद पानी भी इसके नजदीक आ जाए। पानी इसके पास आने से पहले ही हवा में भाप बनकर उड़ जाएगा और छतरी गीली तक नहीं होगी। इसके लिए इसमें से खास तरह के रेडिएशन निकलते हैं और देखा जाए तो असल में वही हमारी छतरी का काम भी करते हैं।[13]

मृत संजीवनी का आविष्कार (कमलेश भट्ट कमल) एक ऐसी काल्पनिक विज्ञान कथा है जो 22वीं सदी की आखिरी रात से शुरू होती है। स्पोटिंग स्टेशन (साबिर हुसैन) अंतरिक्ष में हो रहे अतिक्रमण की बात करती है।

गोविंद शर्मा के 'भूल चूक लेनी देनी' संग्रह में विज्ञान पर आधारित बाल कथाएँ हैं। जिनमें धरती से चंद्रमा तक के सफर में बच्चों की बहादुरी व उनके सद्भावना पूर्ण व्यवहार की झांकी बड़ों को भी एक सबक देती है। बरसात (दीनदयाल शर्मा) का वैज्ञानिक विश्लेषण करने वाली कहानी 'बरसात' बच्चों की वर्षा के बारे में अनेक जिज्ञासाओं को संतुष्ट करती हैं। शिखर चंद्र जैन की कहानी 'चंद्रयान-3 की जरूरत' बच्चों को अंतरिक्ष की सैर कराती वैज्ञानिक कहानी है। मनोहर चमोली मनु की 'बैलून यात्रा' विज्ञान गल्प है। मनोहर चमोली मनु की 'रखनी है साफ सफाई' वैज्ञानिक कहानी है।

बाल उपन्यासों की कथावस्तु बालकों के मनोविज्ञान व मस्तिष्क पर आधारित है। विज्ञान उपन्यासों में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे की उड़न तश्तरियाँ, डॉ. बोमा की डायरी, विनोद अग्रवाल का शुक्रग्रह के मेहमान, कैलाश शाह का हरे दानव का देश, ओमप्रकाश का सोने का गोला, सुरेश आमेटा का उड़नतश्तरी का रहस्य, मोहन सुंदर राजन का अंतरिक्ष यान के करनामें, विजय कुमार बिस्ता का अंतरिक्ष की सैर, डॉ. पृथ्वी नाथ पांडेय का अनोखी ग्रह के विचित्र प्राणी आदि का भी हिंदी बाल उपन्यासों के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. देवसरे का वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अंधविश्वासों के विरुद्ध चेतना जगाने वाला उपन्यास एक और भूत भी अपने ढंग का अकेला उपन्यास है।[14] विज्ञान से संबंधित हर कोई घटना बच्चों को लुभाती है। बच्चों के लिए विज्ञान एक जादू की तरह है। नन्हें हाथ खोज महान, आओ चंदा देश चले, मंगल ग्रह पर राजू, डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट घना जंगल डॉट

कॉम, स्वान यात्रा, चंदू के कारनामे, भाप की शक्ति पहचान ली, चंदा मामा दूर के, होटल का रहस्य, अंतरिक्ष के रहस्य इत्यादि हरि कृष्ण देवसरे के वैज्ञानिक व तकनीकी युग पर आधारित उपन्यास है।

प्रसिद्ध दार्शनिक वैज्ञानिक बर्ट्रेंड रसेल का कथन है कि 'वैज्ञानिक प्रगति के दो इंजन हैं। एक है समाज में वैज्ञानिक सोच का विकास और दूसरा है परिवर्तन की ललक।'[15] हमारे बाल जीवन का विकास भी इन्हीं दो इंजनों पर निर्भर करता हैं।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने बच्चों की जानकारी के लिए विज्ञान की लाभकारी व विनाशकारी शक्तियों का परिचय अपनी रचनाओं के माध्यम से दिया है। इन्होंने बीसवीं सदी का विलक्षण आविष्कार: 'लेसर' पुस्तक में मेसर और लेसर किरणों के प्रभाव लिखे हैं। 'उपयोगी आविष्कार' वैज्ञानिक आविष्कारों से संबंधित रचना है। इस पुस्तक में तीन लेखकों के पांच आलेख संग्रहित है इसमें डॉ. शुक्ल के 'रेलगाड़ी', 'आतिचालकता', 'रोबोट' तीन आलेख हैं। रोबोट एक विलक्षण वैज्ञानिक आविष्कार है जो एक यंत्र मानव होता है। रोबोट शब्द चेक भाषा का है जिसका अर्थ सेवक होता है।

जाकिर अली रजनीश का सपनों का राजा, हरि दुनिया, सुपरमैन, विभा देवसरे का शनि लोक, जयप्रकाश भारती का बर्फ की गुड़िया, हरि कृष्ण देवसरे का चटपट चंदू आदि वैज्ञानिक तथ्यों से जुड़े बाल उपन्यास धारावाहिक रूप में पराग पत्रिका में प्रकाशित हुए।

ह्यूमन ट्रांसमिशन (जाकिर अली रजनीश) विज्ञान कथा पर आधारित बाल उपन्यास है जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना वह भी व्यक्ति का। एक स्थान से दूसरे स्थान पर टीवी प्रसारण की भांति भेजना ह्यूमन ट्रांसमिशन कहलाता है। इस तरह ह्यूमन ट्रांसमिशन में व्यक्ति को तरंगों की भांति एक स्थान से दूसरे स्थान पर ट्रांसमिशन किया जा सकता है।

विज्ञान फंतासी: हिंदी बाल कथाओं में विज्ञान पर एक लेखन में दो मुख्यत: दो दृष्टियां काम करती हैं- विज्ञान की जानकारी देना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना। वैज्ञानिक बाल कथाओं की एक तीसरी श्रेणी भी है, जिसमें वैज्ञानिक यथार्थ की अपेक्षा कल्पना या फेंटेसी तत्व अधिक हावी होता है। डॉ. देवसरे के अनुसार 'इनमें बहुत से लोग विज्ञान को प्लेटफार्म बनाकर कल्पना के सहारे दूसरे लोकों में पहुँच जाते हैं।'[16]

फेंटेसी ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है किसी चीज को साकार करना अथवा मूर्त बनाना। यह ऐसे सत्य को उद्घाटित करती है जो सामान्य मनुष्य की पहुँच से परे है। परंपरागत फेंटेसी में परी कथाएँ, जादू की कहानी, अलिफ लैला की कहानी आदि आ जाते हैं। फेंटेसी के पात्र इस दुनिया के मनुष्य, पशु-पक्षी अथवा खिलौने आदि जड़ पदार्थ और जिन्न-भूत परियाँ आदि काल्पनिक पात्र भी हो सकते हैं किंतु वह दुनिया इस दुनिया से बिल्कुल भिन्न विचित्र व काल्पनिक होनी चाहिए। फेंटेसी देश और काल की सीमाओं से मुक्त साहित्य है। फैंटेसी का आकर्षण सार्वजनिक और सर्वकालिक होता है।

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने लिलिपन स्मिथ की पुस्तक एक क्रिटिकल एप्रोच टू चिल्ड्रेन्स लिट्रेचर से उद्धृत करते हुए फंतासी के स्वरूप का विवेचन किया हैं। फंतासी कल्पना की वह क्रिया है जो किसी अमूर्त वस्तु की क्रिया,स्थिति, रूप तथा आकार का बोध कराती है। उदाहरणस्वरूप काव्य और काव्यगाथाओं में 'चंदामामा' सर्वाधिक पुरानी फंतासी है।

जिस प्रकार बच्चों के लिए लिखी गई विज्ञान कथा का आधार वैज्ञानिक तथ्य होते हैं, उन्हीं के आधार पर कल्पना आगे बढ़ती हुई संभावनाओं को सत्य के रूप में प्रस्तुत करती है। यही विज्ञान-फंतासी है। विभा देवसरे का 'शनिलोक', राज् कुमार जैन का 'नकली चाँद', जाकिर अली रजनीश का उपन्यास 'समय के पार', विज्ञान फंतासी पर आधारित है। अंतरिक्ष में विस्फोट (जयंत विष्णु नार्लीकर) एक विज्ञान फंतासी है। जिसमें कल्पना का पुट डालकर बच्चों के लिए प्रस्तुत किया गया है। डॉ. शोभनाथ लाल का सीपियाण्ड़ेला की सैर छोटे-छोटे तेरह खंडों में विभक्त एक विज्ञान फंतासी है जिसमें कल्पना का पुट डालकर अपनी धरती और देश को स्वर्ग के समान बनाने की प्रेरणा दी गई है।[17]

'सीपियाण्ड़ेला की सैर' (शोमनाथ लाल) उपन्यास में 21वीं सदी के बालक को भविष्य के लिए चेतावनी दी गई है।

रचनाकार प्रकाश मनु की फैंटसी कथाओं का उद्देश्य वैज्ञानिक तथ्यों को कल्पना के आधार पर व्यक्त कर बालकों को विज्ञान के साथ जोड़ना है। 'मंगल ग्रह की लाल चिड़िया' (प्रकाश मनु) कहानी मंगल ग्रह पर जीवन की संभावनाओं की पुष्टि करती है। चंद्रलोक की अदृश्य दुनिया कहानी बच्चों के चांद पर जाने के सपने को पूरा करती है। वर्ष 2095 अर्थात भविष्य को लेकर लिखी गई यह कहानी चंद्र ग्रह पर जीवन होने के रहस्य को खोलती है।

'विज्ञान फंतासी कथाएँ' और 'अजब अनोखी विज्ञान कथाएँ' कहानी संग्रह की विज्ञान फंतासी कथाएँ बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करती है। इनकथाओं में अंतरिक्ष ग्रह की यात्रा में रोबोट से जुड़े विषयों में वैज्ञानिक तथ्यों को आधार बनाकर कल्पना के द्धारा प्रस्तुत किया गया है। इन कथाओं में कल्पना के साथ-साथ वैज्ञानिक तर्क दिए गए हैं। 'गिल गिल सेवक चौकीदार' विज्ञान की नई तक की खोज रोबोट पर आधारित फेंटेसी कथा है। मार्था की नीली गुड़िया में गुड़िया रोबोट रूप में है जो आकाश में उड़ भी सकती है और बोल भी सकती है। इन कथाओं में कल्पना से भरे हुए भविष्य में तकनीक और विज्ञान की दिन प्रतिदिन हो रही प्रगति का इतिहास है। शब्दभेदी तीर कहानी परमाणु हथियारों से बचने के लिए बनाए गए तीरों का वर्णन करती हुई फंतासी है।अनोखी चिड़िया 'शिंगाई फू शुम्मा, लो चला पेड़ आकाश में फेंटेसी कथाओं का उद्देश्य बच्चों के वैज्ञानिक स्तर में परिवर्तन लाना है। जिससे उनमें वैज्ञानिक रुचि पैदा हो सके तथा विज्ञान के उपयोग-दुरुपयोग की समझ पैदा हो। यांत्रिकी और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के उपयोग व दुरुपयोग से अवगत कराती रिमझिम छतरी उड़ने वाली विज्ञान फंतासी है। विज्ञान फंतासी साहित्य सामान्य से विशेष की ओर बढ़ता है। प्रकाश मनु ने विज्ञान फंतासी साहित्य में विज्ञान की धरातल पर बाल मन को टटोल कथा का ताना-बाना बुना है।

बाल विज्ञान लेखन व प्रकाशन : बाल साहित्य-समीक्षा से संबंधित विभिन्न ग्रंथों के अध्‍ययन से स्पष्ट होता है की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 60 के दशक में बाल पत्रिकाओं के अतिरिक्त इंडियन प्रेस, पुस्तक भंडार, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, राजपाल एंड संस एवं राजकमल प्रकाशन ने बाल विज्ञान संबंधी साहित्य का प्रकाशन किया। इनके अतिरिक्त दैनिक-पत्रों, साप्ताहिक-पत्रों में भी बाल विज्ञान कथा साहित्य का लेखन शुरू हुआ।

सातवें दशक में शकुन प्रकाशन, शिक्षा भारती, दिल्ली और साहित्य निकेतन कानपुर ने भी बाल विज्ञान कथाओं का प्रकाशन किया। इनमें मौलिक लेखन व अनुवादित साहित्य प्रकाशित हुआ। महान वैज्ञानिक एवं उनकी वैज्ञानिक खोजों पर ही विज्ञान लेखन रहा। सत्तार के दशक में आगे

बढ़ने का हौसला बाल पत्रिकाओं ने ही किया। ये पत्रिकाएँ बाल भारती, बालसखा एवं पराग थी। आठवें दशक में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा बाल विज्ञान कथाएँ एवं यात्राएँ प्रकाशित हुई।

आज ऐसा बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है जो बच्चों को संस्कारित करने के बजाय उनकी प्रवृत्तियों को विकृत कर रहा है। ऐसी पुस्तकें न केवल आज के बचपन को खोखला कर रही हैं अपितु देश के भविष्य को भी नष्ट कर रही है। प्रत्येक अभिभावक का यह कर्तव्य है कि वह बच्चें को अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराये व यह जाने की बच्चा क्या पढ़ रहा है? बच्चों के साहित्य से संबंधित गोष्ठियों, काव्य-समारोह व वाद- विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाना चाहिए। बाल शिक्षण के कार्य में लगी सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं को भी बाल साहित्य की अभिवृद्धि के लिए योजनाबद्ध प्रयासों का क्रियान्वयन करना होगा। समाज में हो रहे विकास और वैज्ञानिक प्रगति के साथ बच्चों का सतत् समन्वय बनाए रखने और उन्हें पर्याप्त मात्रा में मानसिक खुराक देते रहने के लिए नित नये और स्तरीय बाल साहित्य के सृजन की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी।

निष्कर्ष - आज के वैज्ञानिक युग में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों और अंधविश्वासों से ऊपर उठ विज्ञान और वैज्ञानिक सोच के ज्यादा निकट आ गए हैं। वर्तमान समय में बच्चों की सूचना प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति के संबंध में जानकारी चमत्कृत कर देने वाली है। यह संचार क्रांति धीरे-धीरे जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है। सूचना क्रांति के संवाहक फैक्ट, टी.वी., सैटेलाइट, टेलीफोन, इंटरनेट, ई-मेल, मल्टीमीडिया, मोबाइल, वीडियो फोन जैसे उपकरणों को बच्चे जानते हैं। जिस कारण बाल साहित्य में वैज्ञानिक चेतना का समाहार अभियुगीन आवश्यकता बन चुका है, किंतु यह सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक आज बाल साहित्यकारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। कहीं यह नयी व्यवस्था बच्चों को संवेदनहीन न कर दे।

बच्चे बाल साहित्य में रुचि ले इसके लिए अपरिहार्य है कि बाल साहित्य सस्ता, सुलभ, रोचक, चिंताकर्षक व प्रकाशन की दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि का हो। मीशन के रूप में अधिकाधिक प्रतियोगिताओं व प्रतिस्पर्धाओं द्वारा बाल साहित्य की प्रायरू सभी विधाओं में पर्याप्त बाल साहित्य का प्रकाशन कराया जाये जो विज्ञान के इस युग में बच्चों की आकांक्षाओं व जिज्ञासाओं के अनुकूल हो। घिसा- पिटा या एक ही लीक पर चलने वाला बाल साहित्य न तो आज के बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और न ही बच्चे उसे पसंद करेंगे। निरंकार देव सेवक के शब्दों में 'बच्चों की जिज्ञासाओं, भावनाओं और कल्पनाओं को अपना बनाकर उनकी दृष्टि से ही दुनिया को देखकर जो साहित्य बच्चों के लिए सरल भाषा में लिखा जाए वही बच्चों का अपना साहित्य होता है।[18] आज का बाल साहित्यकार बच्चों का दोस्त बन उनके सुख-दुख का, उनकी उत्सुकताओं और कठिनाइयों का यानि उनके सब कुछ का भागीदार होता है।

वैज्ञानिक बाल साहित्य विज्ञान की ही प्रगति का परिणाम है। हिंदी बाल कथा साहित्य में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करने वाले विज्ञानपरक साहित्य ने बच्चों को रोचक व मनोरंजक साहित्य प्रदान करते हुए उसकी लाभ और हानि से अवगत करवाया है। इस प्रकार बाल कथा साहित्य में विज्ञान कथाएँ तथा विज्ञान फंतासी अपने-अपने कलेवर में बच्चों को विज्ञान के साथ जोड़ उनकी सोच को परिपक्व करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बाल गीत साहित्य: निरंकार देव सेवक (प्रस्तावना भाग से), किताब महल इलाहाबाद, 1966
2. हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन, हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1969, पृष्ठ संख्या 5
3. हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एंड सन्स,दिल्ली, 1969 प्रश्न संख्या 7
4. हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एंड सन्स,दिल्ली, 1969 प्रश्न संख्या 7
5. हिंदी बाल साहित्य कुछ पड़ाव, दिविक रमेश, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार 2015, पृष्ठ संख्या 148
6. हिंदी बाल साहित्य कुछ पड़ाव, दिविक रमेश, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार 2015, पृष्ठ संख्या 8
7. जैन, अभिनेय कुमार, हिंदी बाल साहित्य: प्राचीन एवं आधुनिक दृष्टि, नीरज बुक सेंटर, दिल्ली, 2009 पृष्ठ संख्या 118-119
8. कालरा, डॉ. शकुंतला, हिंदी बाल साहित्य विधा-विवेचन, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या 531
9. संपादक, यादव, उषा एवं सिंह, राजकिशोर, हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, सामयिक प्रकाशन 2014, पृष्ठ क्रमांक 282
10. यादव, उषा एवं सिंह, राजकिशोर, हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, सामयिक प्रकाशन 2014, पृष्ठ संख्या 220
11. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, जय प्रकाश भारती, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ संख्या 250
12. आजकल, नवंबर 2016 संपादक फरहत परवीन पृष्ठ संख्या 6
13. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण, बाल साहित्य मेरा चिंतन, मेधा बुक्स, दिल्ली 2002, पृष्ठ संख्या 87
14. भारतीय बाल साहित्य संपादक, हरिकृष्ण देवसरे, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या 592
15. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, जयप्रकाश भारती हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ संख्या 204
16. भाषा मई- जून 2007 पृष्ठ संख्या 90
17. भारतीय बाल साहित्य संपादक, हरिकृष्ण देवसरे, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या 591
18. हिंदी बाल साहित्य कुछ पड़ाव, दिविक रमेश, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार 2015, पृष्ठ संख्या 8

****